"बाबुल का सपना - बिदाई"

कल ही की बात है — १७ जुलाई २००८ रात के साढ़े आठ से साढ़े नौ के बीच स्टारप्लस पर दो सीरियल "किस देश में है मेरा दिल" और "बाबुल का सपना - बिदाई" में अज़मेर शरीफ़ और हाजी अली को महानता का जामा पहनने की भरमार कोशिश।

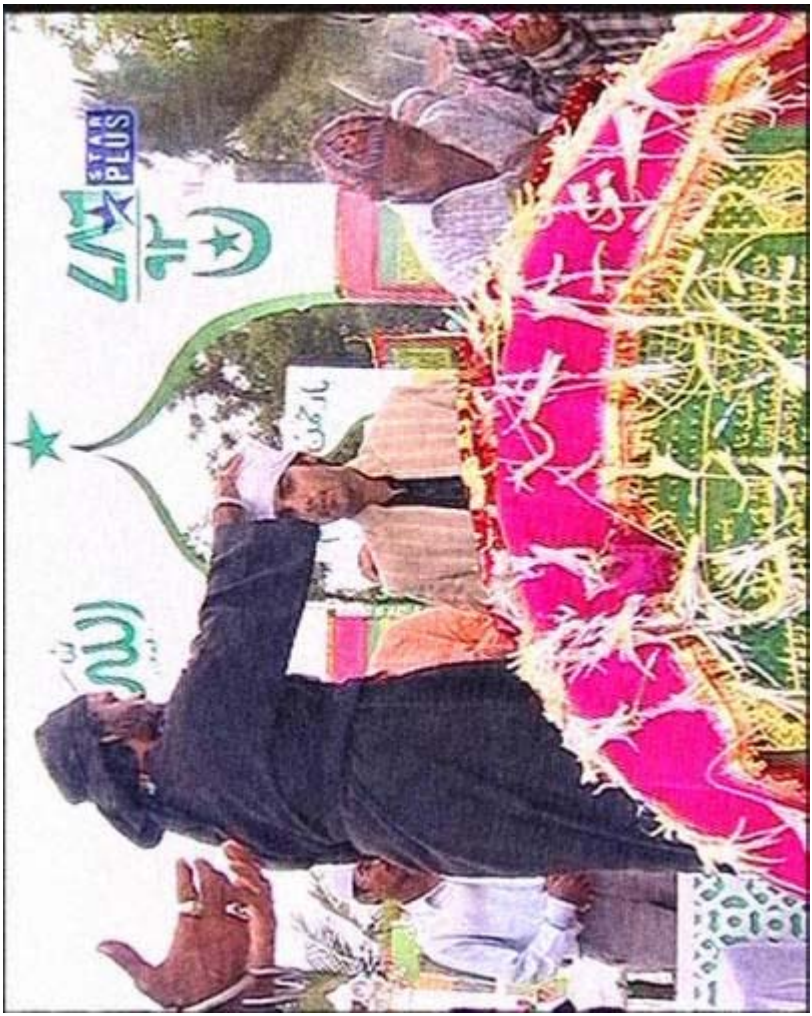

जब रणवीर राजवंश दुःखी होता है तो हाज़ी अली जाकर मुल्ला से आशीर्वाद लेता है — वैसे इसमें कोई नुकसान नहीं, केवल इसके कि **यह**

हिन्दू युवकों को प्ररोक्ष रूप से प्रेरित करता है ऐसा करने के लिए पर उसे बताये बिना कि मुसलमान युवकों को इस बात की इजाजत नहीं कि वे हिन्दू मन्दिर में जाकर पुजारी से आशीर्वाद ले, **साथ ही यह भी बताये बिना कि** मुस्लिम युवकों को कुरआन यह हिदायत देता है कि "मौका मिलते ही" हिन्दू मंदिरों को तुड़वा दो। पाकिस्तान में बँटवारे के बाद से यही किस्सा शुरु हुआ और बाँग्लादेश में भी यही हो रहा है आज तक।

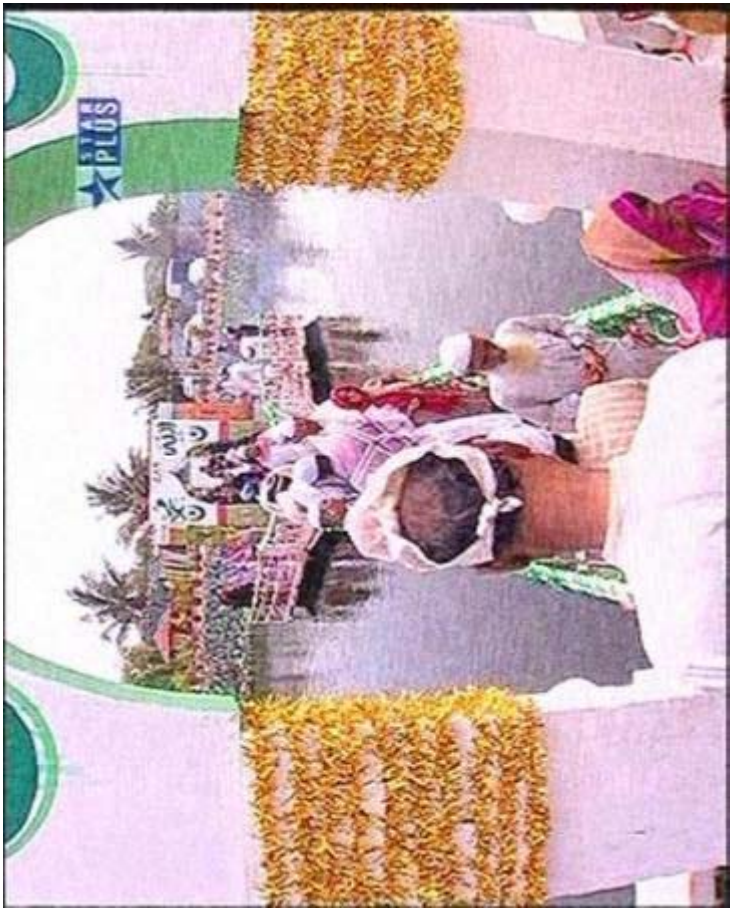

रणवीर और रागिनी का मेल कराने के लिए भी हाज़ी अली में दोनों का पहुँचना भी कुछ उसी प्रकार काम आता है जैसे "किस देश में है मेरा दिल" में बाप-बेटे का मिलन अज़मेर शरीफ़ में होता है।

संभव है कि यह सत्य हो कि किसी शहजादे तैमूर को लोगों से प्यार रहा होगा **पर किन लोगों से? क्या केवल उन लोगों से नहीं जो अल्लाह के बंदे रहे होंगे?** क्या हर मुसलमान सुल्तान को **हिन्दुओं तथा गौमाता का कत्लेआम** करने का शौक नहीं रहा? क्या अकबर "महान" ने भी यह सब नहीं किया — यद्यपि बड़ी कुशलता के साथ उन सब वारदातों को उन **इतिहास की पुस्तकों से मिटा दिया गया है** जो हम हिन्दुओं को पढ़ाई जाती रही हैं? क्या यह सत्य नहीं कि अकबर का बाप हुमायूँ **राजपूतानी की राखी की लाज बचाने नहीं** बल्कि अपने प्रतिद्वन्दी एक अन्य मुसलमान सुल्तान से बदला लेने के लिये अपनी सेना सहित निकला था जबकि इतिहास जो हमें पढ़ाया जाता है वह **हुमायूँ को गौरवान्वित** करता है और

दुःख के साथ हमें बताता है कि वह समय पर पहुँच कर राखी की लाज न बचा सका **पर वही इतिहास हमें बताना भूल जाता है कि** हुमायूँ कभी वहाँ पहुँचा ही नहीं क्योंकि वह बीच रास्ते डेरा डाले अपने प्रतिद्वन्दी की ताक में बैठा रहा। मुसलमानों को गौरवान्वित करने के लिए इतिहास में फेर-बदल के कितने **अनगिनत षड़यंत्र किए गये हैं** इन सबका लेखाजोखा करने बैठें तो वर्षों लग जायेंगे। हमारे इतिहासकार, हमारी मीडिया मुसलमान सूफियों को गौरवान्वित करने के लिए हर प्रकार की सट्ल (चतुराई से व्यवस्थित) चेष्टा करने से नहीं थकती **पर यह बताना सदा भूल जाती है कि** कितने ही **मुसलमान सूफियों ने स्वयं अनगिनत हिन्दू मन्दिर तुड़वाये,** और **दो मुसलमान फ़कीरों के उकसाने** पर ही बाबर ने अयोध्या का जन्मस्थन मन्दिर तुड़वाया। **प्रश्न है हिन्दू को सत्य आज कौन बतायेगा? और क्या हिन्दू ऐसे व्यक्ति को सम्मान देगा या उसे कट्टरपंथी का नाम देकर उससे मुँह चुरायेगा?**